INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

WWW.CASIRJ.COM
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

चित्रकला का चित्र सूत्र

लेखक प्रा. संतोषराव अरुण खवळे,
सहाय्यक अधिव्याख्याता, भारती विद्यापीठ, भारती कला महाविद्यालय, कात्रज पुणे ४६.
Mail Id : santoshraokhawale@gmail.com
सहाय्यक लेखक प्रा. किशोर नागनाथराव पोतदार,
असिस्टंट प्रोफेसर,भारती विद्यापीठ, कॉलेज ऑफ फाईन आर्ट, पुणे ४६.
Mail Id : kishorepotdar4@gmail.com

विषय :चित्रकला का चित्रसूत्र

सारांश :

इस शोध निबंध की परिकल्पना यह मानती है कि भारतीय चित्रकला की गहराई में जाकर, इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सौंदर्य संबंधी आयामों को उजागर करके और इसे व्यापक कला-ऐतिहासिक ढांचे के भीतर प्रासंगिक बनाकर, भारतीय चित्रकला का एक व्यापक सिद्धांत तैयार किया जा सकता है। यह सिद्धांत भारतीय चित्रकला की अनूठी विशेषताओं, शैलीगत विकास और सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करेगा, जिससे वैश्विक कला विमर्श में इसके स्थान की गहरी समझ में योगदान मिलेगा।

इसके माध्यम से, भारतीय चित्रकला के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और सौंदर्य संबंधी आयामों को उजागर किया जा सकता है। इस निबंध में चित्रकला के विभिन्न पहलुओं को व्यापक कला-ऐतिहासिक ढांचे के भीतर प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया गया है। इसके फलस्वरूप, भारतीय चित्रकला के विशेषताओं, शैलीगत विकास, और सांस्कृतिक इस शोध निबंध का उद्देश्य भारतीय चित्रकला के चित्रसूत्र को प्रस्तुत करना है। महत्व को स्पष्ट करके, इसे वैश्विक कला विमर्श में महत्वपूर्ण स्थान पर ले जाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना :

चित्रकला का चित्रसूत्र

भारतीय चित्रकला के सिद्धांत का अनावरण

भारत में चित्रकला की कला सहस्राब्दियों तक फैली हुई है, जो विभिन्न संस्कृतियों, मान्यताओं और ऐतिहासिक आख्यानों को दर्शाती है जिन्होंने उपमहाद्वीप को आकार दिया है। भीमबेटका की प्राचीन गुफा चित्रों से लेकर मुगल काल के जटिल लघु चित्रों तक, भारतीय चित्रकला शैलियों, तकनीकों और विषयों की एक समृद्ध टेपेस्ट्री में विकसित हुई है। हालाँकि, भारतीय और वैश्विक कला दोनों पर इसके गहरे प्रभाव के बावजूद, भारतीय चित्रकला के सार और विकास को स्पष्ट करने वाले व्यापक सैद्धांतिक ढांचे में एक अंतर मौजूद है।

यह थीसिस परियोजना भारतीय चित्रकला की गहराई में जाकर, इसके सैद्धांतिक आधारों को उजागर करके और कला इतिहास के व्यापक संदर्भ में इसके महत्व को स्पष्ट करके इस कमी को भरने का प्रयास करती है। सूक्ष्म परीक्षण और विश्लेषण के माध्यम से, इस अध्ययन का उद्देश्य एक सामंजस्यपूर्ण सिद्धांत

का निर्माण करना है जो न केवल भारतीय चित्रकला की अनूठी विशेषताओं को स्पष्ट करता है बल्कि वैश्विक कलात्मक प्रवचन में इसके योगदान पर भी प्रकाश डालता है।

भारत में चित्रकला की कला इतिहास, आध्यात्मिकता, संस्कृति और सौंदर्यशास्त्र के धागों से बुनी गई एक जटिल टेपेस्ट्री है। गुफाओं में पाए गए प्राचीन शैल चित्रों से लेकर आधुनिक कलाकारों के जीवंत समकालीन कैनवस तक, भारतीय चित्रकला उपमहाद्वीप की समृद्ध और विविध विरासत को दर्शाती है। वैश्विक कला पर इसके गहरे प्रभाव के बावजूद, व्यापक सैद्धांतिक ढांचे में एक अंतर मौजूद है जो भारतीय चित्रकला के सार और विकास को पूरी तरह से स्पष्ट करता है। इस थीसिस परियोजना का उद्देश्य भारतीय चित्रकला की गहराई में जाकर, इसके सैद्धांतिक आधारों को उजागर करके और कला इतिहास के व्यापक संदर्भ में इसके महत्व को स्पष्ट करके इस अंतर को पाटना है।

कीवर्ड - चित्रकला की पारंपरिक भारतीय अवधारणा, सिट्रा का मतलब, लॉफ़र, डेव, पेंटर, **शिल्पकारी क्षमता, भावनात्मक संवाद, तकनीकी निपुणता, आत्मविश्वास और नवाचारीता, व्यक्तिगत रुचि और संवेदनशीलता,** निष्कर्ष.

संशोधन पद्धती - संशोधन पद्धतियों में जानकारी प्राप्त करने के लिए लिखित साहित्य, रिकॉर्ड, प्रशासकीय आकड़े, वृत्तपत्र, साप्ताहिक, मासिक, पुस्तकें, ग्रंथ, इंटरनेट आदि जैसे स्रोतों का उपयोग किया जाता है।

चित्रकला की पारंपरिक भारतीय अवधारणा।

इस कार्य के सैद्धांतिक और पद्धतिगत ढांचे के आधार पर, वर्तमान अध्याय इस बात की जांच करता है कि चित्रसूत्र किस प्रकार पाठकों को चित्रकला से परिचित कराते हैं, इसकी उत्पत्ति के मिथक, चित्र शब्द का

अर्थ, चित्रकार की आकृति और उसका वर्गीकरण . सभी चित्रसूत्र चित्रकला की अपने-अपने तरीके से व्याख्या करते हैं लेकिन उनमें कई पहलू समान हैं। इनमें से एक पहलू कला की दैवीय उत्पत्ति का है। नागनजित और विष्णुधर्मोत्तर के चित्रलक्षण में चित्रकला का परिचय एक मिथक के वर्णन के साथ दिया गया है जो कि विश्वकर्मा और नागनजित जैसे पारंपरिक अधिकारियों के महत्व पर जोर देता है।

फिर अध्याय पाठ्य स्रोतों के अनुसार सिट्रा शब्द के अर्थ का विश्लेषण करता है। इस बात पर जोर दिया जाएगा कि इस शब्द का पेंटिंग के सामान्य अर्थ से अलग महत्व हो सकता है, इसके बजाय यह "मानसिक छवि" के अधिक अमूर्त अर्थ का संदर्भ देता है, यानी एक छवि जो किसी दिए गए पाठ के पाठक के दिमाग में काम करती है। पेंटिंग के शुभ-अशुभ लक्षण भी बताए गए हैं। इसका उद्देश्य अनुपात, रुख और रंग जैसी अवधारणाओं के महत्व पर जोर देना है, जो चित्रकला के सिद्धांत में मौलिक हैं जैसा कि चित्रसूत्रों में बताया गया है, लेकिन कला इतिहासकारों द्वारा अक्सर इसे कम करके आंका जाता है।

यह अध्याय चित्रकार की आकृति और उसकी विशेषताओं के बीच विसंगति पर भी प्रकाश डालता है जैसा कि चित्रसूत्र के लेखकों और माध्यमिक साहित्य में वर्णित चित्रकार द्वारा देखा गया है। अंत में, अध्याय चित्रकला के वर्गीकरण और उसकी व्याख्याओं के आलोचनात्मक विश्लेषण के साथ समाप्त होता है। सभी चित्रकला के इन पहलुओं को ग्रंथों की एक विस्तृत श्रृंखला के संदर्भ में समझाया और चर्चा की गई है, जिससे सिद्धांत का एक व्यापक व्यापक अवलोकन प्रदान किया गया है।

सिट्रा का मतलब

"सिट्रा" शब्द का मतलब विभिन्न संदर्भों में विभिन्न हो सकता है, लेकिन चित्रकला की व्याख्या के संदर्भ में, यह आमतौर पर चित्रकला के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है। "सिट्रा" शब्द का उपयोग कुछ ग्रंथों में चित्रकला के विभिन्न आयामों और पहलुओं को व्याख्यात करने के लिए किया जाता है। यह शब्द अनेक रूपों में प्रयोग किया जाता है, जैसे कि चित्रकारी, रंग, आकार, रेखा, प्रकार, और उपाय। इसका मतलब विभिन्न संदर्भों और परिस्थितियों के आधार पर बदल सकता है, लेकिन सामान्य रूप में, यह शब्द चित्रकला को संक्षेप में संदर्भित करने के लिए प्रयुक्त होता है।

लॉफ़र (1913) सिट्रा शब्द के अर्थ पर संदेह व्यक्त करने वाले पहले व्यक्ति हैं, उनका तर्क है कि इसका अर्थ केवल पेंटिंग से अलग है। उनका मानना है कि शरीर विज्ञान (मनुष्यों की विशेषताएं) का विज्ञान उन संभावित स्रोतों में से एक है जहां से चित्रकला की उत्पत्ति हुई और इसलिए सिट्रा शब्द इस विज्ञान से जुड़ा है।

डेव (1991) इस बात से सहमत हैं कि चित्रलक्षण के लेखक समुद्रवित् थे, जैसा कि मानव शरीर रचना विज्ञान में लक्षणों की विविधता के बारे में उनके विस्तृत ज्ञान से प्रमाणित होता है। शरीर विज्ञान या सामुद्रिक शास्त्र का विज्ञान उत्तम मॉडलों का वर्णन करता है और चित्रकला के बजाय शारीरिक संदर्भ से अधिक चिंतित प्रतीत होता है, लेकिन यह चित्रलक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है।

चित्रसूत्र के अनुसार चित्रकला की अवधारणा चित्रसूत्र चित्रकला की मुख्य विशेषताओं, विशेषकर शुभ और अशुभ चिह्नों के वर्णन के साथ व्याख्या करते हैं। ये विवरण विशेष रूप से माप, अनुपात और रंग जैसी मूलभूत अवधारणाओं के महत्व पर जोर देते हैं।

विष्णुधर्मोत्तर के अनुसार चित्रकला सभी कलाओं में सर्वोत्तम है और धर्म, अर्थ तथा काम प्रदान करती है। पेंटिंग वाला घर शुभ माना जाता है। पाठ यह भी बताता है कि जैसे सुमेरु सबसे उत्कृष्ट पर्वत है, गरुड़ पक्षियों में प्रमुख है, राजा सभी मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ है, चित्रकला सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है। मार्कंडेय ने वज्र के साथ अपने संवाद में यह भी कहा है कि चित्रसूत्र में बताए गए सभी नियम केवल सारांश हैं, क्योंकि कई सौ वर्षों में भी नियमों को विस्तार से बताना संभव नहीं है। वह यह भी समझाते हैं कि जो अनकहा रह गया है उसे नृत्य से समझना चाहिए और नृत्य में जो अनकहा रह गया है उसे चित्रकला से सुधारना चाहिए। इसके अलावा, पेंटिंग के नियमों का पालन मूर्तिकला के लिए भी किया जाना चाहिए और यह सोना, चांदी और तांबे जैसी धातुओं पर भी लागू होना चाहिए।

पेंटर

चित्रसूत्र द्वारा प्रवर्तित चित्रकला का एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व स्वयं चित्रकार की अपनी विशेषताओं सहित आकृति है। उनकी भूमिका को ग्रंथों द्वारा बहुत संक्षेप में वर्णित किया गया है, जिसने कुछ विद्वानों को इस महत्वपूर्ण और सक्रिय व्यक्ति का वर्णन करने के लिए अपने स्वयं के तरीकों का उपयोग करने की अनुमति दी है। चित्रकार का विस्तृत वर्णन नहीं किया गया है; चित्रसूत्रों में उनके चरित्र को समर्पित कोई एक अध्याय नहीं है, हालाँकि ग्रंथों के विभिन्न छंदों और अनुभागों से उनके बारे में एक विचार बनाना संभव है।

विष्णुधर्मोत्तरा का कहना है कि एक विशेषज्ञ चित्रकार वह है जो गर्दन, हाथ, पैर और कानों को बिना सजाए चित्रित करने में सक्षम है। उसे स्पष्ट गहराई और प्रक्षेपण के बीच और चेतना से भरे हुए सोए हुए व्यक्ति और जीवन शक्ति से रहित मृत व्यक्ति के बीच अंतर को चित्रित करने में सक्षम होना चाहिए। एक विशेषज्ञ को हवा की गति के साथ लहरों, आग की लपटों, धुएं, झंडों और कपड़ों आदि को चित्रित करने में भी सक्षम होना चाहिए।

चित्रसूत्र के अनुसार, चित्रकला का एक और महत्वपूर्ण तत्व चित्रकार की अपनी विशेषताओं सहित आकृति है। यह आकृति उसके व्यक्तित्व, अनुभव, और अद्वितीयता को प्रकट करती है। चित्रकार की भूमिका और कला के माध्यम से, वह अपने स्वयं के दर्शन, भावनाएं, और समझ को दर्शाता है। उसकी आकृति उसकी समझ, नजरिया, और कला में उन अद्वितीय तत्वों को प्रकट करती है जो उसे अन्यजनों से अलग बनाते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरा के अनुसार, एक विशेषज्ञ चित्रकार को अपनी कला में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित विशेषताओं का होना चाहिए:

शिल्पकारी क्षमता: एक अच्छा चित्रकार सामान्यतः उस सामग्री को समझने में सक्षम होता है जो उसके पास उपलब्ध होती है। वह उसका सही उपयोग करके कला को प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। उसे गर्दन, हाथ, पैर और कानों जैसे अंगों को बिना सजावट के चित्रित करने की क्षमता होनी चाहिए।

भावनात्मक संवाद: उसे आकृति में भावनाएं और जीवंतता को प्रकट करने की क्षमता होनी चाहिए। भावनात्मक संवाद का मतलब है कि चित्रकार को अपनी आकृतियों में भावनाएं और जीवंतता को प्रकट करने की क्षमता होनी चाहिए। यहाँ, "संवाद" का अर्थ है कि चित्रकार अपनी कला के माध्यम से दर्शक के साथ एक सांविधानिक या मानवीय संवाद स्थापित करता है। भावनात्मक संवाद का मकसद है चित्रकार की भावनाओं, विचारों, और अनुभवों को दर्शक तक पहुंचाना। इसके माध्यम से, वे दर्शकों के साथ संवाद करते

हैं और उनके मन में एक विशेष भावना या अनुभूति को उत्पन्न करते हैं। भावनात्मक संवाद की क्षमता चित्रकला को जीवंत और प्रेरणादायक बनाती है, और इससे दर्शकों के साथ गहरा संवाद होता है।

तकनीकी निपुणता: वह अपनी कला के लिए उपयुक्त तकनीक का सही उपयोग करने में समर्थ होना चाहिए। तकनीकी निपुणता का अर्थ है कि चित्रकार को अपनी कला के लिए उपयुक्त तकनीक का सही उपयोग करने में समर्थ होना चाहिए। यह तकनीकी कौशल को समझने और उसका सही रूप से उपयोग करने की क्षमता को संदर्भित करता है। एक चित्रकार को विभिन्न तकनीकों के ज्ञान, जैसे कि रेखाचित्र, रंग, आदि, होना चाहिए ताकि वह अपनी कला को सटीकता और उत्कृष्टता के साथ प्रस्तुत कर सके। उच्च तकनीकी निपुणता से, चित्रकार अपनी विचारों और विचारों को सही तरीके से अभिव्यक्त करने में सक्षम होता है, जिससे उनका कार्य अधिक मान्यता प्राप्त करता है।

आत्मविश्वास और नवाचारीता: उसे नई और अनूठी कला दृष्टिकोण और विचारों को स्वीकार करने की क्षमता होनी चाहिए। आत्मविश्वास और नवाचारीता का मतलब है कि चित्रकार को नई और अनूठी कला दृष्टिकोण और विचारों को स्वीकार करने की क्षमता होनी चाहिए। यह उन्हें खुद पर और अपनी कला पर विश्वास करने की सामर्थ्य प्रदान करता है, जिससे वे नए और अनोखे रूप में कला को अभिव्यक्ति कर सकते हैं। आत्मविश्वास उन्हें साहस और संजीवनी देता है तथा नवाचारीता उन्हें नए और साहसिक रूपों में सोचने और काम करने के लिए प्रेरित करता है। इन गुणों के साथ, चित्रकार नए और उत्कृष्ट रूप से अपनी कला को प्रस्तुत कर सकता है और अपने क्रियाकलापों में समृद्धि और स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है।
व्यक्तिगत रुचि और संवेदनशीलता: उसकी कला में उसकी अद्वितीय पहचान और व्यक्तिगत रुचि का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। इन विशेषताओं के साथ, चित्रकार की आकृति उसकी खुद की पहचान को प्रकट करती है और उसके चित्रित विचारों और विचारधाराओं को दर्शाती है। इस रूप में, उसकी आकृति उसका अद्वितीय संदेश और उसकी कला की विशिष्टता को प्रकट करती है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त चर्चा ने कई मुद्दों और बिंदुओं को उठाया है जिन्हें संक्षेप में निष्कर्ष के माध्यम से एकीकृत किया जा सकता है। सबसे पहले, इसने प्रदर्शित किया है कि जबकि प्रत्येक पाठ पेंटिंग या सिट्रा के बारे में अलग-अलग विचार व्यक्त करता है, वे सभी कुछ बुनियादी धारणाएं साझा करते हैं, जिन्हें लगातार दोहराया जाता है, और जो भारतीय चित्रकला की अपेक्षाकृत एकीकृत सैद्धांतिक नींव का सुझाव देते प्रतीत होते हैं। विशेष रूप से, चित्रकला की दैवीय उत्पत्ति की धारणा इन विभिन्न ग्रंथों में व्यापक रूप से साझा की जाती है, विशेष रूप से पहले वाले, जो दो मुख्य मिथकों के माध्यम से इसका वर्णन करते हैं। हालाँकि बाद के ग्रंथ ऐसे किसी भी मिथक का वर्णन नहीं करते हैं, लेकिन वे ब्रह्मांड के दिव्य वास्तुकार, विश्वकर्मा के निर्विवाद अधिकार को पहचानते हैं, जिसका उल्लेख अन्य ऋषियों के साथ अक्सर किया जाता है।

विश्वकर्मा की भूमिका को स्वीकार करते हुए, चित्रलक्षण और बृहत् संहिता जैसे ग्रंथों में एक अन्य प्राधिकारी का उल्लेख किया गया है, जिसका नाम नग्नजीत है, जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने पृथ्वी पर पहली पेंटिंग बनाई थी और स्वयं विश्वकर्मा से ही उचित माप और अनुपात के सिद्धांत में महारत हासिल

की थी। हालाँकि, नागनजीत की पौराणिक आकृति केवल प्रारंभिक ग्रंथों में दिखाई देती है, जबकि विश्वकर्मा की छवि न केवल ग्रंथों में वर्णित है, बल्कि उनकी छवि मंदिरों में प्रतिष्ठित है, और इस भगवान के प्रिंट पारंपरिक चित्रकारों के स्टूडियो की दीवारों पर देखे जा सकते हैं। , विशेषकर राजस्थान में

इस चर्चा से जो दूसरा निष्कर्ष निकाला जा सकता है वह चित्रकला और अन्य कलाओं के बीच संबंध का है। विष्णुधर्मोत्तर के एक अंश में इस पर जोर दिया गया है, जो कलाओं के सहसंबंध की ओर इशारा करता है। यह खंड स्पष्ट रूप से सुझाव देता है कि चित्रकला को नृत्य, संगीत और गायन की कलाओं की सराहना के व्यापक परिप्रेक्ष्य के बिना नहीं समझा जा सकता है। इस निर्देश के सार को इस अध्ययन में एक मॉडल के रूप में लिया गया है, जिसमें चित्रसूत्र की कुछ अवधारणाओं को समझने के लिए अन्य विषयों के ग्रंथों, उदाहरण के लिए नटव शास्त्र, की जांच की जाती है।

अंत में, पेंटिंग को प्रकारों में वर्गीकृत करने के विभिन्न दृष्टिकोणों के विश्लेषण से पता चलता है कि पाठ नियमों से अधिक विचारों के बारे में हैं। प्रत्येक पाठ चित्रकला के विभिन्न प्रकारों की गणना करता है। कभी-कभी इन वर्गीकरणात्मक धारणाओं को चित्रों में धूलिचित्र के रूप में पहचाना जा सकता है, लेकिन अधिकांश समय विभिन्न प्रकार की पेंटिंग व्याख्या के अधीन रहती हैं। इसलिए इन्हें चित्रों की आलोचना के मानक के रूप में लागू करना कठिन है।

भारतीय चित्रकला की एकीकृत सैद्धांतिक नींव: विभिन्न ग्रंथों में चित्रकला की दैवीय उत्पत्ति के मिथक और धारणाएं साझा की जाती हैं, जो एक एकीकृत सैद्धांतिक नींव का सुझाव देते हैं।

चित्रकला और अन्य कलाओं के संबंध: चित्रकला को नृत्य, संगीत और गायन की कलाओं के साथ एक परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए।

चित्रों के विभिन्न प्रकार: चित्रकला के विभिन्न प्रकारों को वर्गीकृत करने के विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन करना चाहिए। इससे हमें चित्रों के रूप, शैली और संदेश को समझने में मदद मिलती है।

आलोचना की चुनौतियाँ: चित्रों की आलोचना करते समय, विभिन्न प्रकार की पेंटिंग की व्याख्या करने के मानक को ध्यान में रखना चाहिए, जो कई बार विवादित हो सकता है।

इन निष्कर्षों के माध्यम से, चर्चा में उठाए गए विभिन्न मुद्दों और बिंदुओं को समझने में मदद मिलती है, और भारतीय चित्रकला के संबंध में एक समृद्धता का पता चलता है।

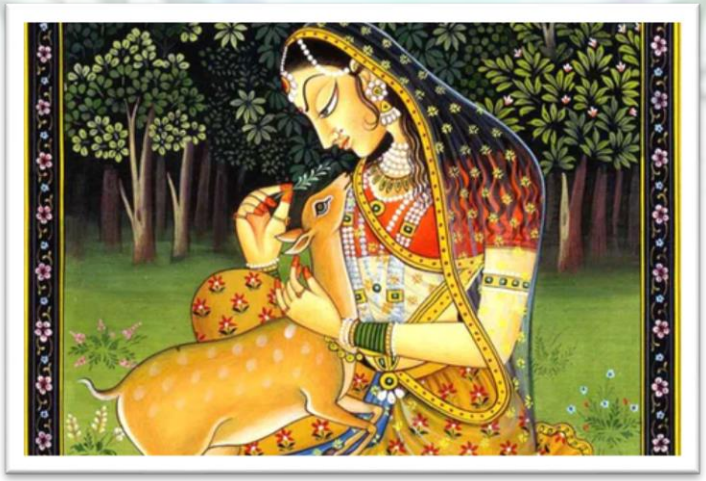

भारतीय कला की आकर्षक दुनिया

संदर्भसूची : १) विष्णूधर्मोत्तरपुराणीय चित्रसूत्रम, लेखक पारुल दवे – मुखर्जी,
२) विकिपीडिया गुगल

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM